Impact Factor : 1.9152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 9 | May– 2017

भारतीय नारी जीवन का विकास एवं उसका संघर्ष

श्रीमती. सविता अण्णाराव नागूर
पीएच. डी. अनुसंधान छात्रा,
सोलापुर विश्वविदयालय, सोलापुर .

प्रस्तावना :

गौरवशाली भारतीय संस्कृति तथा भारतीय जीवन पध्दति की आधारशीला है 'नारी'। केवल आधारशिला की नहीं अपितु नारी तो परिवार की पूर्ण–रूपेन संचालिका है । अपनी अन्यान्य भूमिकाओं को निभाते हुए प्रेम, वात्सल्य, त्याग, तपस्या, परिश्रम, बुध्दी, व्यवहार चातुर्य तथा अनुशासन से परिवार को फलस्वरूप समाज को प्रगतिपथ पर अग्रसर रखने का कार्य नारी करती है । अतः भारतीय जीवन में नारी को श्रेष्ठत्व प्रदान किया गया है ।

परिवार ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के सुचारू संचलन में नारी की अहमं भूमिका होती है। विश्व का विकास, मानव की निर्मिति और मानव जन्म की निरंतरता के लिए 'नर–नारी' दोनों का अस्तित्व अनिवार्य है । नर–नारी एक दूसरे के बिना अधूरे है । सृष्टि के विकास में दोनों की भूमिका समान एवं महत्त्वपूर्ण है । इसी कारण प्रकृति के 'नर और नारी' को परस्पर पूरक एवं आवश्यक बनाया है ।

प्रकृति के नियमानुसार चलनेवाली भारतीय जीवन पध्दति में भी धार्मिक एवं सामाजिक स्तर पर पति–पत्नी दोनों को समान स्थान दिया गया है । नारी को 'अर्धांगिनी', 'सहधर्मिनी' कहते हुए नर के समान दर्जा दिया गया है ।

अनेक कारणों के फलस्वरूप नारी की इस श्रेष्ठता में देश, काल, वातावरण के अनुसार बदलाव होते गए । परिस्थितिनुसार एवं कालानुसार नारी की महत्ता कभी दबती तो कभी उभरती गई । धार्मिक, सामाजिक तथा पारिवारिक स्तर पर नारी की बदलती स्थिति एवं अपना प्राकृतिक स्थान पाने हेतु नारी ने किए संघर्ष पर विचार करेंगे ।

नारी शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ –

नर और नारी दोनों एक दूसरे के बिना अस्तित्वशून्य हैं। वे प्रकृति के दो अभिन्न अंग हैं। नर–नारी शब्द का उपयोग समान रूप से किया जाता है ।मानव जाति के लिए प्रयुक्त इन दोनों शब्दों को प्रकृति ने लिंग के संदर्भ में जो भिन्नता रखी है, उसे दर्शाने के लिए इन शब्दों को प्रयोग में लाया जाता है।

सभी भारतीय भाषाओं की जननी के रुप में संस्कृत को मान्यता मिली है। अतः प्रथमतः संस्कृत में ही 'नारी' शब्द की व्युत्पत्ति खोजते हैं।

'नारी' शब्द संस्कृत का है। वह 'नर' शब्द का स्त्री रूप माना गया है।[1]

'नर' संस्कृत के शब्द 'नृ'(नय) धातु से बना है। 'नृ' (नय) की 'अज' से संधि होकर नर शब्द बना है। 'नारी' शब्द नृ + अञङ़ीन के संधि से बना है।[2]

मानक हिंदी कोश में नारी को नर का स्त्री रुप मानते हुए अर्थ दिया है–

अ) मनुष्य जाति का लिंग के विचार से वह रुप जो गर्भ धारण करके प्राणियों को जन्म देता है।

ब) प्रकृति, माया। [3]

नालंदा विशाल शब्द सागर मे नारी के लिए 'औरत', 'स्त्री' इन शब्दों का प्रयोग किया है।[4]

हिंदी शब्द कोश में भी नारी के लिए महिला, औरत, स्त्री इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया है।[5]

हिंदी शब्दसागर में भी इन्हीं शब्दों का उल्लेख मिलता है। हिंदी विश्वकोश में नारी के लिए जो अन्य पर्यायवाची शब्द प्रयुक्त होते हैं, उन शब्दों द्वारा 'नारी का अर्थ स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।' इस कोश में नारी के लिए 'स्त्री, वामा, महिला, प्रिया' आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। [6]

अमरकोश में नारी के लिए पर्यायवाची शब्द देते हुए नारी के रुप एवं उसकी मनोवस्था को आधार बनाया गया है। जैसे – योषा,योषिता,अबला, वनिता, रमा, कांता, ललना, रमणी, पुरंध्री, भोगिनी, महिषी आदि। [7]

आधुनिक हिंदी कोश में भी नारी का अर्थ स्पष्ट करने के लिए इन पर्यायों को दिया हैं– योषा, योषिता, वनिता, दारा,कलत्र, महिला, वधु, अबला, कांता, कामिनी, बाला–आदि ।[8]

डॉ. भोलानाथ तिवारी जी ने तो अपने बहुउददेशीय शब्दकोश मं नारी का अर्थ स्पष्ट करने के लिए पर्यायवाची शब्दों की शृंखला ही दी है। वह इस प्रकार – अर्धांगिनी, अबला, औरत, इस्तिरी, कबीला, कलत्र, कांता, कामिनी, गृहिणी, घरनी, चरणदासी, योषा, जनियॉ, जबी, जानी, जोरु, जोषा, जोषिता, तिय, तीय, त्रिया दारा, पत्नी, पतिप्रदर्शिनी, वनिता, बनी, वामा, बाला, बीबी, भामा, भामिनी, महिला, मादा, मानवी, योषिता वनिता, ललना, लुगाई, वासिता, श्यामा, घरवाली, चहेती, जनाना, प्राणगृहिती, प्राणप्रिय, प्रियतम, प्रिया, भायी, मेहरी, वल्लभा, वंशा, वामगंनी, संगिनी, सजनी, सहचरी, सहचारिणी,सुआसनी, स्त्री, रहम, द्वितीया, धर्मणी, धर्मपत्नी, नंदिनी, पतिनी, परिगृहा, प्रणयिनी, प्राणगृहिता.. आदि। [9]

जितनी भूमिकाएँ नारी निभाती है, उतने उसके रूप हैं। जितने उसके रूप है, उतने उसके नाम है। जितने उसके नाम है, उतने अर्थों से नारी शब्द प्रयुक्त होता है।

नारी जीवन का सुवर्णकाल–

देश, काल, वातावरण के अनुसार नारी की स्थिति में बदलाव आते गए। ज्ञात इतिहास और प्राप्त, ज्ञान के आधार पर कहा जाता है कि वैदिक युग में नारी को गौरवपूर्ण एवं श्रेष्ठ स्थान प्राप्त था । जिस कारण नारी जीवन के परिप्रेक्ष्य में वैदिक काल को 'सुवर्णकाल' कहा जाता है।

प्राचीन वैदिक काल में सामाजिक दृष्टि से स्त्री–पुरूष समान माने जाते थे । नारी को गृहस्वामिनी का पद प्राप्त था । अपनी गृहस्थी में नारी पति के बराबर की हकदार थी । धार्मिक उपासना के संदर्भ में भी स्त्रियों को पूरी स्वतंत्रता थी । स्त्री और पुरूष दोनों को धार्मिक कार्यों में समान महत्त्व था । केवल धार्मिक ही नहीं, अपितु आर्थिक कार्यों में भी स्त्री और पुरूष समान, रूप से भागीदार थे ।

सामाजिक जीवन में लडकियों के मत एवं विचारों का मान रखा जाता था। लडकों के साथ लडकियों का भी उपनयन संस्कार किया जाता था । इतना ही नहीं, तो लडकियों को लडकों की बराबरी से अपना जीवनसाथी चुनने का पूरा मौका मिलता था । इस काल में विधवाओं का पुनर्विवाह होता था । स्त्रियाँ और विधवा नियोग द्वारा संतानोत्पति कर सकती थी। सती–प्रथा का चलन नहीं था ।

वैदिक काल में स्त्रिया अपनी ईच्छित शिक्षा पा सकती थी । वे कला, कृषि, युध्दशास्त्र के साथ वेदाध्ययन भी करती थी । ऋग्वेद की कतिपय ऋचाओं की रचयिता नारियाँ ही हैं। वैदिक काल की मैत्रेयी, गार्गी, लोपमुद्रा... आदि विदुषियों को आज भी आदर से याद किया जाता है। इस काल में आदिशक्ति, जगद्जननी, सृष्टिकर्ता के रूप में नारीशक्ति की पूजा होती थी।

अंततः कह सकते हैं कि वैदिक युग में स्त्री–पुरूषो कीस्थिति में कोई असमानता नहीं थी।[10] बल्कि स्त्रियों को जगद्जननी के रूप में अधिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा मिलती थी।

नारी जीवन का पराधीनता काल–

वैदिक काल के बाद नारी को स्थिति में धीरे–धीरे गिरावट दर्ज की गई। उसकी महत्ता कम होती गई। इस युग के ब्राह्मण, आख्यानक एवं उपनिषदों के ग्रंथो में समाज का जो चित्रण मिलता है, उससे नारी की स्थिति उभरकर सामने आती है । इस युग में नारी का व्यक्तित्व सिकुडता गया । उसका प्रमुख कारण माना जाता है 'नारी की पवित्रता'। समाज में नारी की पवित्रता पर अधिक बल दिया जाने लगा । आर्यों का अनार्य स्त्रियों के साथ विवाह होने के कारण पूरे 'पत्नी' वर्ग को ही अपवित्र समझा जाने लगा । साथ ही उसके रजोधर्म को अपवित्र काल मानकर नारी को धार्मिक कार्यों से वंचित रखा जाने लगा । धार्मिक कार्यों में कर्मकांड एवं जटिलता बढती गई । परिणामस्वरूप 'पुरोहित' वर्ग का निर्माण हुआ और नारी धार्मिक कार्य से अलग होते – होते यज्ञवेदी से बाहर जा पहुँची । प्राकृतिक अधिकारों एवं सामाजिक हकों से स्त्री को वंचित रखा जाने

लगा । जिससे नारी का सामाजिक, मानसिक, वैचारिक विकास थम–सा गया। पुरूषों की तुलना में हर स्तर पर स्त्री अबला बनती गई ।

इसी काल से कन्या की अपेक्षा 'पुत्र' को अधिक वरीयता दी जाने लगी। फलस्वरूप कन्या को जन्म देना स्त्री के लिए अपराध बन गया । कन्या केवल एक अभिशाप बनकर रह गई। गर्भ की संतान 'पुत्र' ही हो इस मनोकामना से 'पुसंवन' अनुष्ठान किया जाने लगा।

शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण, विशिष्ठ धर्मसूत्र, आपस्तंब धर्मसूत्र, बोधायम धर्मसूत्र आदि ग्रंथो से ज्ञात होता है, कि इस काल में नारी केवल भोग और दान की वस्तू बनकर रह गई । नारी के साथ शुद्रों–सा व्यवहार होने लगा । गृहस्वामिनी से अब नारी मात्रअनुगामिनी बनकर रह गई ।

आगे जाकर 'महाकाव्य काल' में भी नारी की स्थिति में सुधार नहीं आ सका । महाभारत हो या रामायण – इन महाकाव्यों में चित्रित घटनाओं से हम स्त्री की स्थिति में आती गिरावट तथा पुरूषों के स्त्रियों पर बढते अधिकारों का अंदाजा लगा सकते हैं । महाकाव्यों में तप, त्याग, नम्रता, परिपरायणता, सेवाभाव आदि गुणों से युक्त स्त्रियों के ही चित्रण मिलतें है । स्वतंत्र विचारोंवाली, विदुषी, मानिनी स्त्री कहीं दिखती नहीं । महाकाव्यों से समाज में प्रचलित बहुपत्नित्व, पत्नी परित्याग, दहेज आदि कुप्रथाएँ भी सामने आती हैं ।

''कुल मिलाकर इस युग की नारी की धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थिति में गिरावट बढती गई।''[11]

'पुराण काल' में बहुपत्नित्व की प्रथा बढ गई । विधवा–विवाह पर प्रतिबंध आने लगे तथा स्त्री की विवाह योग्य आयु कम कर दी गई ।

'स्मृतिकाल' में तो स्त्री की स्थिति बद् से बद्तर बन गई । मनुस्मृति में एक ओर नारी को देवता का दर्जा दिया गया, तो दुसरी ओर पिता, पुत्र और पति की भूमिका निभानेवाले पुरूषों के अधीन रहने को बाध्य किया गया । आर्य चाणक्य ने बचा–कुचा कसर भरते हुए स्त्रियों पर अनेक निर्बंध लगाएँ ।

बौध्दकाल में भी पूर्ववर्ती युग के विचारों को कुछ हद तक दोहराया गया । तथागत गौतम बुध्द भी नारी को संघ में शिक्षा देने के पक्षधर नहीं थे ।

इस विवेचन से स्पष्ट होता है, कि उपनिषद काल से मध्यकाल आने तक सिकुडते–सिकुडते नारी का व्यक्तित्व खुद में ही सिमट कर रह गया । इस युग में सामाजिक, धार्मिक एवं पारिवारिक जीवन में नारी पर अनेक निर्बंध लगाते हुए उसे परतंत्र, पराधीन, निःसहाय और निर्बल बना दिया गया। सच में यह काल नारी जीवन के लिए पराधीनता का काल बन गया।

नारी जीवन का अंधःकार –

मध्यकाल में यूनानियों, शकों और मुगलों के आक्रमण से भारतीय समाज में हलचल मची। समाज व्यवस्था, नारी की सुरक्षा एवं उसकी सतित्व की रक्षा के लिए नारी पर अनेक प्रतिबंध लगते गए । पर्दा–पध्दति, सती–प्रथा, जौहर–प्रथा इसी काल की देन है । बाल विवाह, बहुपत्नी–विवाह, अनमेल–विवाह, रखैल–प्रथा, विधवा–विवाह निषेध आदि अनेक कुप्रथाएँ इस युग में शुरू होकर स्थिर हो गई । इन प्रथाओं ने 'नारी–व्यक्तित्व' को पूर्णतः समाप्त कर दिया और नारी केवल भोग्या बनकर रह गई ।

अशिक्षा और अंधविश्वासों की बेडी पहनाकर नारी को पुरूषों की दासी बना दी गई। पुरूष–अधीन इस जिंदगी में विधवा–जीवन तो नारी के लिए एक अघोर अभिशाप बनकर रह गया था ।

एक ओर राजा, नवाब और सामंतों के विलासमयी जीवन में नारी एक वस्तू बनकर रह गई । तो दूसरी ओर रक्त की शुध्दता, धर्म की रक्षा, शील की पवित्रता के नाम पर सामान्य जन स्त्रियों को बँधनों में जकड रहा था । परिणाम स्वरूप स्त्री का स्वतंत्र अस्तित्व ही खो गया।

इस युग में भारतीय नारी व्यक्तित्वहीन और अधिकारहीन बन गई । नारी पर लगे निर्बंधों ने अत्याचार की परिसीमा पार कर दी । कालांतर से यही निर्बंध 'रूढियाँ' बनकर समाज मन पर अपना प्रभाव डालने लगी । अधिकाधिक पाशविकता के साथ इन रूढियों का पालन होने लगा। वर्तमान युग में भी पर्याप्त मात्रा में इन रूढियों का जन–मानस पर प्रभाव दिखाई देता है।

शब्दशः यह युग नारी के लिए अंधःकार काल साबित हो गया।

नारी जीवन स्थिति में सुधारकाल :

परकीय आक्रमण और परकियों की गुलामी का सबसे बडा मूल्य चुकाना पडा 'भारतीय नारी वर्ग' को ! अशिक्षा एवं अंधविश्वासों में घिरी नारी मध्ययुग में उपेक्षित ही रह गई । मूक शोषिता बनकर नारी अपने पर होनेवाले अत्याचारों को सहती रही । इस अवस्था को नारी ने अपनी नियति मानकर स्वीकार लिया था । अन्याय–अत्याचार के प्रति संघर्ष और प्रतिकार का अभाव ही रहा।

उन्नीसवीं शती के अंत में इस परिस्थिति में बदलाव आना शुरू हो गया। मध्ययुग में जहाँ परकीय आक्रमणों के फलस्वरूप नारी ने अपना व्यक्तित्व खो दिया, वहीं अंग्रेजों के प्रति संघर्ष में नारी की अपनी चेतना जाग उठी । झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, कित्तूर की रानी चन्नम्मा, जमानी बेगम, देवी चौधरानी इन वीरागनाओं ने सन 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड दी । यहीं से नारी मुक्ति की शुरूआत भी हो गई। ''पाश्चात्य उदारवादी विचार, शिक्षा–प्रसार,समाज–सुधारकों एवं नेताओं के प्रयासों से वैचारिक परिवर्तन तथा जागरण शुरु हो गया था।''[12]

अंग्रेजों की सत्ता से देश फिर से गुलामगिरी की खाई में जा गिरा, किंतु दूसरी ओर अंग्रेजी शिक्षा के परिणाम स्वरूप देश में सामाजिक पुनर्जागरण एवं राजनीतिक चेतना निर्माण होने लगी। शिक्षा का प्रचार–प्रसार एवं पाश्चात्य संस्कृति का संपर्क होने से अज्ञान, गरीबी, दास्यता एवं थोथी रीति–रिवाजों और परंपराओं के खिलाफ संघर्ष शुरू हो गया। इसका सकारात्मक परिणाम नारी की सामाजिक स्थिति पर होने लगा। सामाजिक सुधारवादी आंदोलन शुरू हो गए । अधिकांश आंदोलन नारी की स्थिति में सुधार के लिए जो आंदोलन चल पडे थे, वे सब पुरूष आंदोलकों द्वारा चलाए जा रहे थे, यह इसकी विशेषता थी। समाज एवं धर्म की रक्षा के नाम पर जिन पुरूषों ने मध्ययुग में नारी को रूढि–परंपराओं में बाँध के रखा था, वहीं पुरूष आज समाज एवं देश के विकास के लिए नारी को दास्यता से मुक्त करने के लिए अग्रसर थे । भारतीय नारी एक साथ सामाजिक रूढियाँ और पुरूषों की दासता दोनों के खिलाफ संघर्ष कर रही थी । इस संघर्ष की शुरूआत उन्नीसवी शती में हुई।

राजा राममोहन राय को नारी मुक्ति आंदोलन का जनक कहा जाता है। उन्होंने 'ब्राह्मों समाज' के माध्यम से नारी मुक्ति की दिशा में अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठाए। नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व पर, उसकी चेतना पर चोट करनेवाले सामाजिक बंधनों एवं कुप्रथाओं के विरोध में उन्होंने आवाज उठाई । उसी वक्त मुंबई, महाराष्ट्र में प्रार्थना–समाज के माध्यम से महादेव रानडे और उत्तर भारत में आर्य–समाज के माध्यम से स्वामी दयानंद सरस्वति तथा दुर्गाराम मेहता, ईश्वरचंद्र विदयासागर, केशवचंद्र सेन आदि सुधारकों ने अपने कार्य में नारी जागरण को प्रमुखता दी। इन सुधारकों के प्रयत्न से निर्मित कानूनों द्वारा सती–प्रथा और बाल–विवाह पर रोक लगाई गई । साथ ही विधवा–पुनर्विवाह और आंतरजातीय–विवाह को मान्यता दी गई । ये दोनों कानून नारी स्थिति सुधार एवं नारी मुक्ति की दिशा में बढाए गए महत्त्वपूर्ण कदम थे ।

अशिक्षा और आर्थिक परावलंबित्व स्त्री मुक्ति मार्ग की बहुत बडी बाधाएँ थी । इन सुधारकों ने स्त्री–शिक्षा को महत्त्व देते हुए स्त्री को शिक्षित करने के लिए भी अनेक प्रयास किए। शिक्षाशास्त्री श्री ईश्वरचंद्र विदयासागर के अथक प्रयास के फलस्वरूप कोलकता में पहला महिला महाविदयालय 'बेडले–कॉलेज' स्थापित हुआ।

महाराष्ट्र में महात्मा जोतिराव फुले और उनकी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले ने इस कार्य में बहुत बडा योगदान दिया। कष्ट, अपमान एवं समाज का प्रतिरोध सहते हुए उन्होंने पूना में लडकियों के लिए पहली पाठशाला की स्थापना की। फुले दंपति के इस कार्य के कारण महाराष्ट्र में नारी मुक्ति का आगाज हुआ। आज देश की अन्य राज्यों की तुलना में महाराष्ट्र की महिलाएँ एवं यहाँ का समाज अधिक पुरोगामी, प्रगत एवं विकसित है, इसका पूरा श्रेय फुले दंपति को जाता है।

विकास के इस सोपान पर अब स्वयं महिलाएँ इस आंदोलन से जुड रही थी। थियोसोफिकल, सोसायटी के माध्यम से 'ब्लावात्सकी' ने इस देश में आकर यहाँ की स्त्रियों के लिए कार्य करना शुरू कर दिया । 'भगिनी निवेदिता' भी शिक्षा के माध्यम से स्त्री जागृती का कार्य करने लगी। एनी बेजेंट भी महिला–मुक्ति कार्य में अपना योगदान दे रही थी ।

राजनीतिक गतिविधियों में भी सक्रिय भाग लेकर स्त्रियाँ अपनी पहचान बनाने लगी । एनी बेजेंट ने सन 1917 में भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस अधिवेशन, कोलकता का अध्यक्षपद हासिल किया । वहीं सन 1925 में सरोजिनी नायडू कॉंग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्षा बनी । श्रीमती सरोजिनी नायडू के नेतृत्व में महिलाओं ने सन 1917

में मताधिकार की माँग की थी । और 1926 में उन्होंने पहली बार चुनाव में भाग भी लिया । सन 1927 में हुए अखिल भारतीय महिला संमेलन ने महिलाओं में राजनीतिक चेतना जगाने का कार्य किया ।

स्वाधीनता प्राप्ति आंदोलन में भी महिलाओं ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । क्रांतिकारियों का सशस्त्र आंदोलन हो या गांधी जी का नमक आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन हो या भारत छोडो आंदोलन या फिर वैधानिक लडाई हो या संविधान निर्माण का कार्य हर मोर्चे पर महिलाएँ अग्रसर थी । कस्तुरबा गांधी, अरूणा असफअली, सुचेता कृपलानी, सरोजिनी नायडू, एनी बेजेंट, रेणूका रे, राधाबाई, अम्मुस्वामीनाथन, अमृत कौर, लीला रे, दुर्गाबाई, प्रितिलता वड्डेदार यह चंद प्रातिनिधिक महिलाएँ है, जिनके उल्लेख के बिना स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास लिखा नहीं जा सकता ।

अंग्रेजों की गुलामी के खिलाफ लडते–लडते नारी के पैरों में पडी सामाजिक बंधनों की बेडियाँ भी टूटती गयी । समाजसुधारक, शिक्षाशास्त्री तथा पूरे समाज को ही विश्वास हो गया, कि नारी की प्रगति के बिना समाज और देश की प्रगति असंभव है । धीरे–धीरे शिक्षा का प्रसार बढने से नारी की स्थिति में पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर सुधार आने लगा ।

नारी जीवन : स्वतंत्रता एवं संघर्ष–

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महिलाओं को एक नई चेतना प्राप्त हुई । आजादी के आंदोलन में अपना सक्रीय योगदान देकर महिलाओं ने खोया हुआ आत्मविश्वास पुनः प्राप्त कर लिया । अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति नारी सजग हो गई । इस सजगता ने नारी को नई शक्ति प्रदान कर दी और नारी अपनी पूरी शक्ति के साथ प्रगति की दिशा में अग्रसर हुई ।

''सन 1947 ई, की राजनीतिक स्वतंत्रता की घटना ने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक क्षेत्रों मे क्रांति निर्माण की ।''[13]

अनेक महिला संगठनों द्वारा स्त्री के अधिकार, हक और स्वतंत्रता के लिए प्रयास होने लगे । सामाजिक–धार्मिक बंधनों से मुक्ति हेतु स्त्री जागरण और समाज में जागृति लाने का कार्य होने लगा । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी के हक में बने कानूनों के कारण नारी का जीवनस्तर उँचा उठने लगा तथा समाज और परिवार में उसे सम्मान प्राप्त होने लगा ।

बदलते परिवेश में घर की जरूरतें पूरा करने के लिए एवं आर्थिक सक्षमता प्राप्ति हेतु महिलाएँ घर के बाहर कार्य करने लगी । नौकरी–व्यवसाय के क्षेत्रों में सफलता पाते हुए नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्रता पाने का प्रयास कर रहीं हैं । उच्च शिक्षा प्राप्त कर हर क्षेत्र में पुरूषों के कंधे से कँधा मिलाकर नारी आगे बढ रही है ।

धार्मिक–पारिवारिक बंधनो से मुक्त होती नारी कुछ नई समस्याओं से धिरने लगी है । औदयोगिक प्रगति के नकारात्मक परिणामस्वरूप विभक्त–कुटुंब व्यवस्था की समस्या निर्माण हो गई । संयुक्त परिवार बिखरने लगे । जिस कारण नारी की जिम्मेदारियाँ बढती गई । घर और नौकरी दोनों जगह वह संघर्ष में पिसने लगी । इसके बावजूद निम्न वर्ग और मध्यम वर्ग की ज्यादातर कामकाजी महिलाओं का स्वयं अपनी कमाईपर अधिकार नहीं है । इस प्रकार स्त्री घर और नौकरी में दोहरे काम का बोझ उठाते हुए दोहरे शोषण का शिकार हो रही है ।

अब घर के साथ घर के बाहर भी उसे लैगिंक अत्याचारों का संघर्ष करना पडता है । बलात्कार, पति–प्रतारणा, शराबी पति के अत्याचार, असमान वेतन आदि समस्याएँ नए से नारी जीवन में प्रवेश कर रही हैं । स्वाधीनता के बाद नई समस्याओं के साथ नारी का संघर्ष आज भी जारी है।

केवल देश ही नहीं, अपितु पूरे विश्वस्तर पर दबाव एवं दमन का प्रतिरोध करते हुए, सभी असमानताएँ नष्ट कर सामाजिक, आर्थिक एवं न्यायिक समता स्थापित करने हेतु नारी आज भी संघर्षरत है ।

नारी जीवन : प्रगति काल –

आधुनिक काल में नारी जीवन की हर बाधाओं को पार करते हुए सभी क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही है । हर क्षेत्र में नारी ने अपना वर्चस्व स्थापित किया है । सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि सभी क्षेत्रों में नारी प्रगतिपथ पर है । साठोत्तरी काल नारी के लिए प्रगतिकाल साबित हो रहा है । इस युग में नारी ने स्वयं को उस मुकाम तक पहुँचाया है, जिसकी वह हकदार है । अपनी क्षमता को सिध्द करते हुए नारी आज प्रगति की उँचाईयाँ छू रही है ।

साठोत्तरी युग में नारी–शिक्षा प्रसार में गति आ गई है । नारी शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन आ गया है । नारी शिक्षा के लिए निःशुल्क शिक्षा, छात्रवृत्ति, आरक्षण व्यवस्था, स्वतंत्र स्कूल–कॉलेज, कानून की सुरक्षा आदि सुविधाएँ मिल रहीं है । परिणामस्वरूप बीसवीं सदी आते–आते देश की पच्चास प्रतिशत से भी अधिक महिलाएँ साक्षर हो गई । शिक्षा का कोई भी हिस्सा महिलाओं के लिए अपरिचित नहीं रहा है।

उच्च शिक्षा प्राप्त कर आज स्त्रियों ने प्रशासकीय क्षेत्र, शिक्षा, पोस्ट, बैंकिंग, रेल, वैदयकीय सेवा इ. क्षेत्रों में अपनी धाक जमाई हैं । कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका में भी नारी ने अपना स्थान निर्माण किया है । ग्रामपंचायत, तालुकापंचायत, जिलापरिषद तथा सहकारी संस्थाओं में नारी अपनी क्षमता सिद्ध कर चुकी है । लोकसभा सभापति, राज्यपाल, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति इन संवैधानिक पदों को आभूषित करते हुए नारी इस देश को सुचारू रूप से चलाने में भी सफल रही है । विज्ञान के सहारे अंतरिक्ष में जा पहुँची नारी साहित्य, संगीत, नृत्य, चित्र, सिनेमा, नाटक वास्तु आदि ललित कलाओं में भी अपनी मोहर लगा चुकी है । अपनी क्षमताओं के बल पर नारी आज प्रगति की चरमसीमा पर पहुँची है।

''आज की नारी जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी पहचान सिध्द करने में सफल बन गई है। वह सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक सभी क्षेत्र में अपने अस्तित्व, क्षमता, शक्ति का लोहा मनवाने में सफल हो गई है। उसके बिना जीवन के सभी क्षेत्र अधूरे एवं एकांगी सिध्द होने लगे हैं।'' [14]

अविरत संघर्षरत नारी स्वयं को सिद्ध कर रही है । मानवी अधिकारों की पुरूषों के बराबरी से वह भी हकदार है, यह बात नारी साबित कर चुकी है । किंतु समाज की सामंतवादी धारणा एवं समाजव्यवस्था की सामंतवादी ढाँचे में आज भी मूलभूत परिवर्तन नहीं हुए हैं । इक्कीसवीं शती की आधुनिक नारी आज भी पुरूषसत्ताक समाज की शिकार हो रही है । घर के साथ बाहर की जिम्मेदारियों को बखूभी निभानेवाली नारी के प्रति पुरूषों का दृष्टिकोण पूरी तरह बदला नहीं है । शारीरिक और मानसिक शोषण के साथ आज उसका आर्थिक और सामाजिक शोषण भी किया जा रहा है। स्त्री का उच्च स्थान और उसकी अधिक आमदनी को पुरूषों की सामंती मानसिकता स्वीकार नहीं कर पा रही है। पुरूष प्रधान समाज आज भी नारी को शील, परंपरा, मर्यादा, कुल सम्मान आदि बँधनों में बाँधकर रखने का प्रयास करता है। वही दूसरी और घर की जरूरतों को पूरी करने हेतु नारी से आधुनिकता की भी माँग करता है । इन कठिनाईयों से लडते हुए नारी अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाने में प्रयासरत है । मुसीबतों का डट कर सामना करते हुए नारी प्रगतिपथ पर अग्रसर है।

अंतिमतः हम यह कह सकते है कि समाज ने आधुनिक शिक्षा के साथ आधुनिक रीति–रिवाज, आधुनिक जीवन पद्धति तो अपना लिया किंतु समाज की मानसिकता नहीं बदल पाई। पुरूषसत्ताक व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक है। पुरूषों की एवं समाज की सामंतवादी मानसिकता में जब बदलाव आएगा, उस वक्त सही मायने में नारी–मुक्ति होगी। बचपन से ही लिंग भिन्नता थोपी जाती है, जिससे शिशुपर स्त्री–पुरूष भेद के संस्कार होते हैं। यही संस्कार आगे चलकर पुरूषसत्ताक समाज व्यवस्था को मजबूती देते हैं । अतः नारी मुक्ति का आंदोलन सफल बनाना हो, स्त्री को उसके मानव होने के अधिकार बहाल करने हो तो जड़ से ही लिंग भिन्नता के संस्कारों को मिटाना आवश्यक है ।

युगों से संघर्ष करती नारी आज एक विशिष्ट मुकाम पर पहुँची है। उसका संघर्ष पुरूषों के विरोध में नहीं है। नारी पुरूषों से नहीं बल्कि पुरूषसत्ताक समाज व्यवस्था से मुक्ति चाहती है। लिंगाधारित विषमता नष्ट कर स्त्री–पुरूष समानता स्थापित करने के लिए वह संघर्षरत है । स्त्री–पुरूषों की परस्पर निर्भरता एवं पूरकता स्वीकार कर जिस दिन समतामूलक समाज का निर्माण होगा, तभी स्त्री संघर्ष को विराम मिलेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1) डॉ. नगेंद्र– विचार और अनुभूति –पृ.6
2) रामचंद्र वर्मा– मानक हिंदी कोश–खंड तीसरा, पृ.250
3) रामचंद्र वर्मा– मानक हिंदी कोश–खंड तीसरा, पृ.250
4) श्री नवल जी–नालंदा विशाल शब्दसागर पृ. 649
5) डॉ. हरदेव बाहरी–हिंदी शब्द कोश पृ.437
6) नरेंद्रनाथ वसु–हिंदी विश्वकोश पृ.697
7) अमरसिंह– अमरकोश–पृ.95,96
8) गोविंद चातक–आधुनिक हिंदी शब्दकोश पृ.308

9) बहुउददेशीय बृहत पर्यायवाची शब्दकोश– डॉ.भोलानाथ तिवारी–पृ.68,78
10) मोतीलाल गुप्ता– भारतीय सामाजिक संस्थाएँ पृ.435
11) डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई–महिला आत्मकथा लेखन में नारी– पृ.69
12) डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई– महिला आत्मकथा लेखन में नारी– पृ.70
13) डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई– महिला आत्मकथा लेखन में नारी– पृ.70
14) डॉ. रघुनाथ गणपति देसाई– महिला आत्मकथा लेखन में नारी–पृ.72